

१ स्वध्वं ३ स्वला ३ स्वदं स ३ धनस युगना नामय
हनक्षनिव ॥ ॥ प्राग ॥ क म्पत नृदिन (ये व नि
हनि स्वयनं क्षत्री मूर्ष्टि वन्धयन (ये व द्रुति धूल
म्यजायते ॥ ॥ वाद्य नूयन वालक ख्यायित ॥ ॥
धयाऽभक्ति विभि ॥ स्वयिता पिताया चान गुरु (थ
स्वान ऊऊम झाद् ॥ यात्रयात् २ नू

मन्त्रायाम्
मूलि जम्बू समुद्रात्
लिङ्गरुद्राय शिष्यलनरुनश्च
नीरुनश्च स्वाहा ॥ दक्षिण ॥

॥ (४) धर्मचक्राय ॥ ॥ धूम ॥ वि
॥ मन्त्र ॥ हुं नमो चन्द्रहासाय च
स्वस्वाहा हि श्रुतनागहा
॥ ७ ॥ ॥ ३

३
७